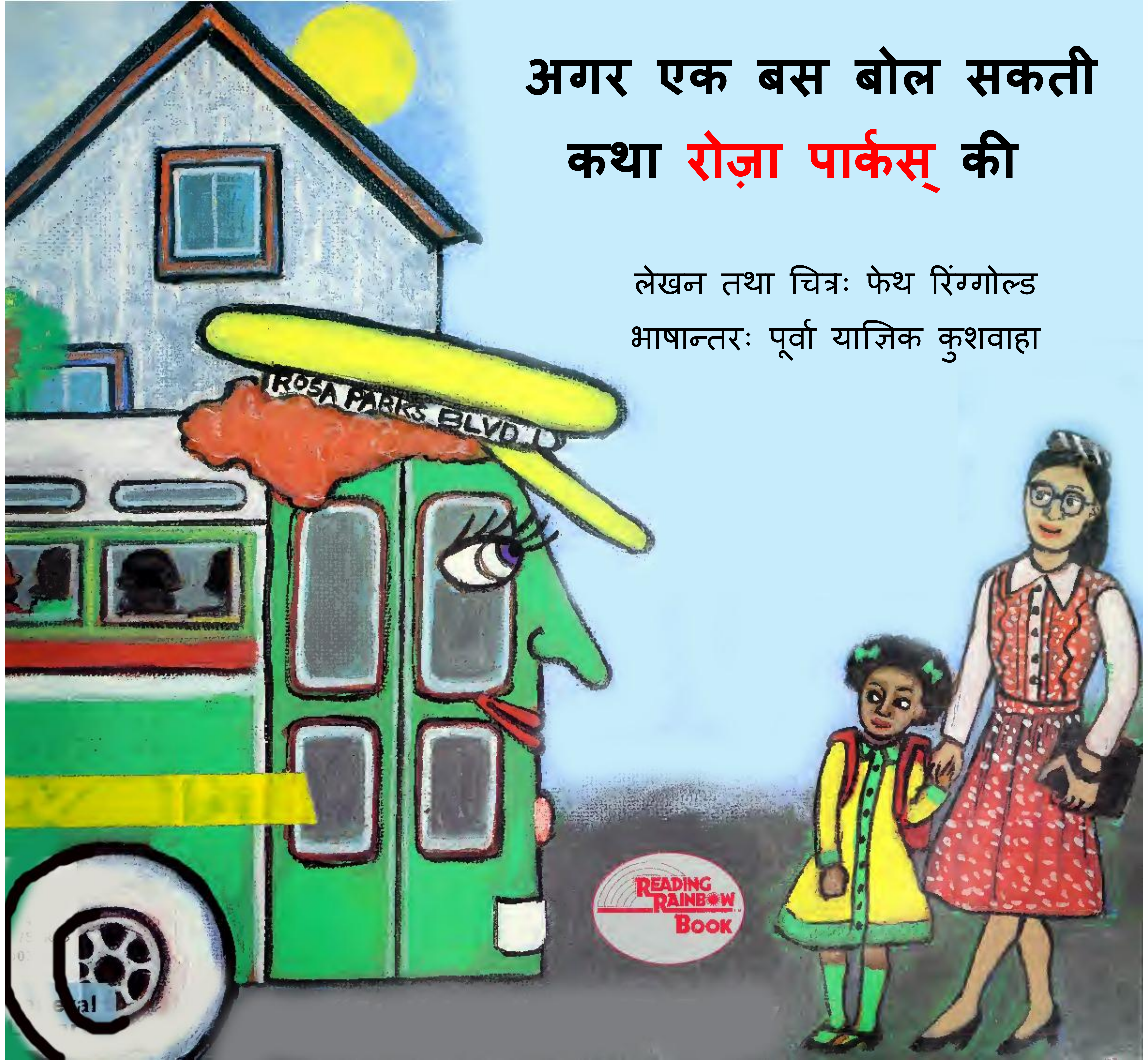
अगर एक बस बोल सकती
कथा रोज़ा पार्कस् की

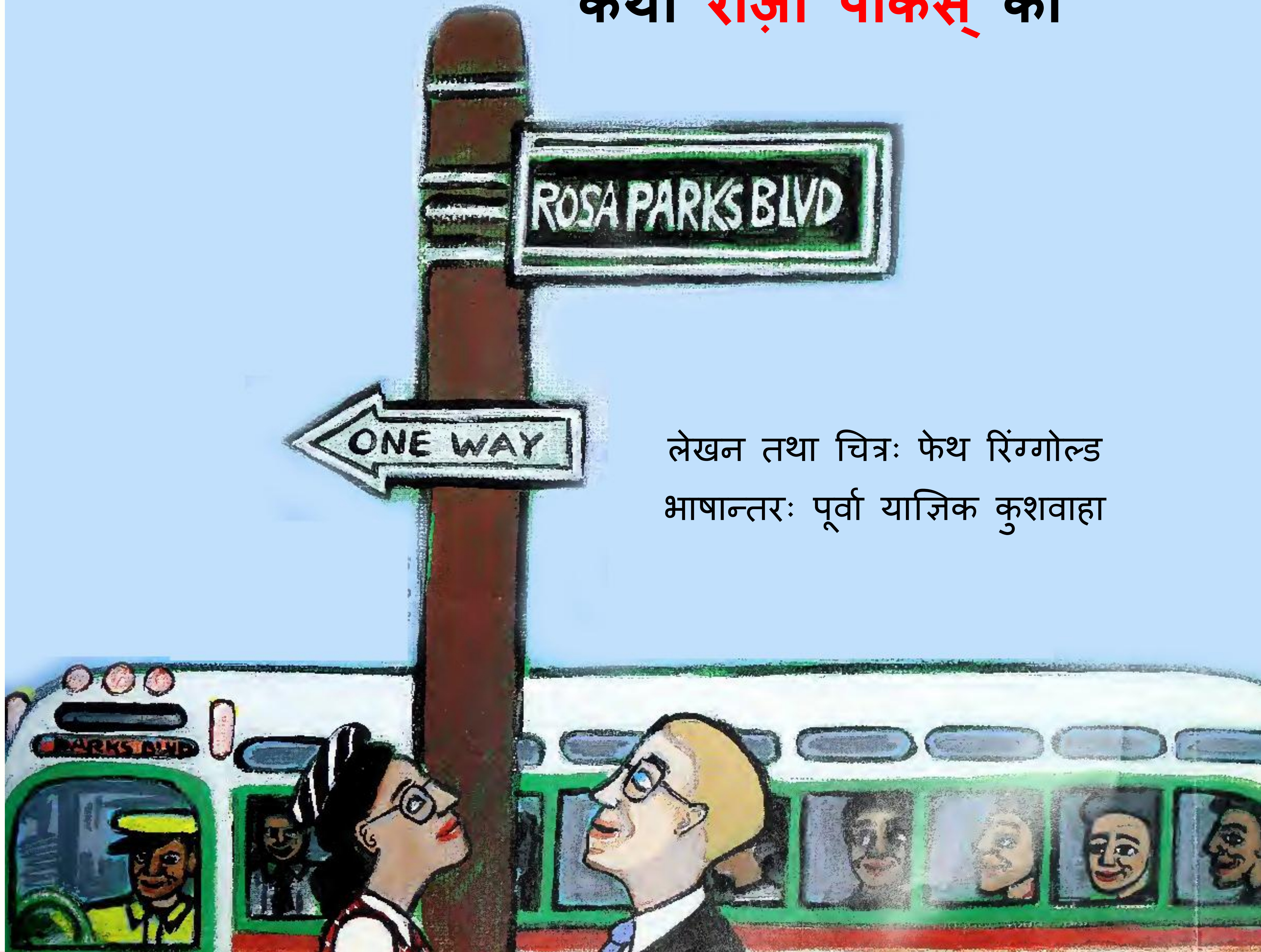
लेखन तथा चित्रः फेथ रिंग्गोल्ड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अगर एक बस बोल सकती

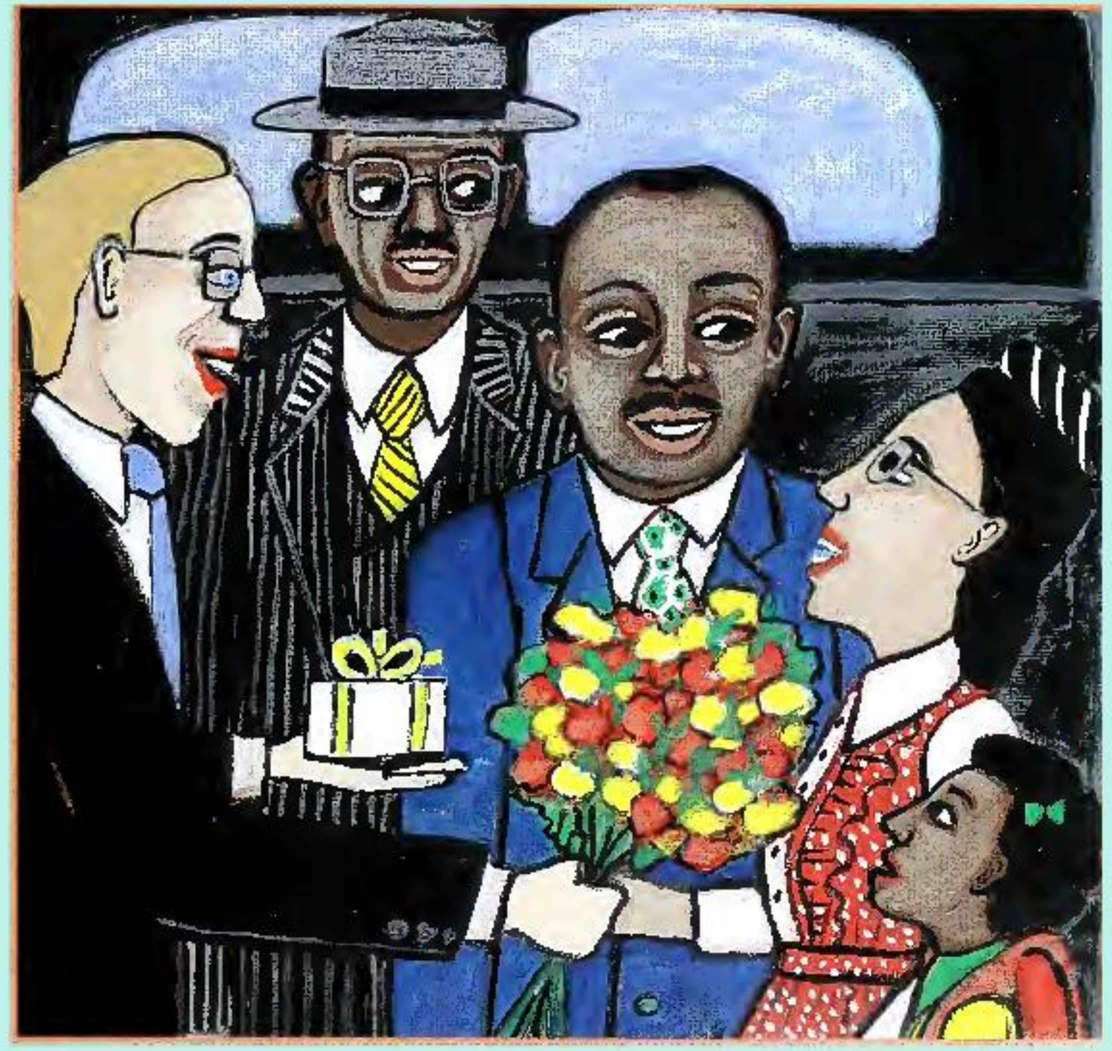
कथा रोज़ा पार्कस् की



लेखन तथा चित्रः फेथ रिंग्गोल्ड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह कहानी रोज़ा पार्कस् को तथा अन्य अज्ञात स्त्रियों, पुरुषों तथा बच्चों को समर्पित है, जिन्होंने अपने साहसिक कृत्यों द्वारा नागरिक अधिकार आन्दोलन में भाग लिया और काले लोगों का मत देना संभव बनाया। साथ ही किसी बस, सिनेमाघर या खाने के काउन्टरों से सेवा पाना, रेस्त्रां में बैठना या फिर किसी होटल में ठहर पाना संभव बनाया।



आज सुबह एक बड़ी अजीब-सी दिखने वाली बस मेरे स्टॉप पर रुकी। वह रोज़ आने वाली बस की तरह नहीं दिख रही थी। पर स्कूल का समय हो चला था, और मैं देर से नहीं पहुँचना चाहती थी। सो मैंने बस में बैठना तय किया। बस का फाटक खुला और एक आवाज़ आई, "चढ़ आओ मोहतरमा!" मैं चढ़ी, यह सोच कि कि चालक से पूछूंगी कि यह बस आखिर है कौनसी?



पर बस चालक अपनी सीट पर बैठा ही नहीं था। मैंने किराए के पैसे डाले और चालक को तलाशने अपनी निगाहें दौड़ाई। मैंने बैठी हुई सवारियों से पूछना शुरु किया ही था कि बस झटके से चल पड़ी। पर चालक की सीट पर अब भी कोई था नहीं। झटके से मेरा संतुलन बिगड़ा और मैं घप्प से एक सीट पर जा गिरी। बाकी सवारियों पर झटके का कोई असर न हुआ। "बस रोको और मुझे उतरने दो!" मैं चीखी, "मुझे ऐसी बस चाहिए जिसका कोई चालक हो!"

"उस सीट को मत लो मार्सी," किसीने कहा।

"मेरा नाम आपको कैसे मालूम है? आप लोगों में से कौन बोल रहा है भला?" मैंने इधर-उधर ताकते हुए पूछा।

पर सवारियाँ आपस में बोल-बतिया रही थीं, कुछ पढ़ रही थीं, तो कुछ खिड़की से बाहर झाँक रही थीं।

"यह एक खास बस है मार्सी, और जिस सीट पर तुम बैठी हो वह एक खास इन्सान के लिए आरक्षित है।"

"आमीन! आमीन!" बस में बैठी सवारियों ने एक सुर में कहा।

"यह बस है कौनसी?" मैंने जानना चाहा।

"यह क्लीवलैण्ड एवेन्यू बस हुआ करती थी, पर अब यह रोज़ा पार्कस् बस है। वे नागरिक अधिकार आन्दोलन की संरक्षक संत मानी जाती हैं। साल में एक दिन हम उस सीट को उनके लिए आरक्षित करते हैं। तुम दूसरी सीट पर बैठो तो मैं तुम्हें उनके बारे में बताऊँ।

अब मुझे लगने लगा कि आवाज़ बस से ही आ रही है। मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ - मैं बोलने वाली बस में बैठी थी। डर से कांपती फिर भी जिज्ञासू मैं, उठ कर बगल वाली सीट पर बैठी और मैंने यह विलक्षण कथा सुनी ...





"रोज़ा मैकॉली, जेम्स तथा लिओना मैकॉली की पहली सन्तान थीं। उनका जन्म 4 फरवरी 1913 में टेक्सीजी, अलबामा, में हुआ था। जब रोज़ा दो वर्ष की थी, उनके पिता जो कुशल बढ़ई और इमारतों को तामीर करने वाले थे, परिवार को छोड़, काम की तलाश में उत्तर चले गए। माँ लिओना, रोज़ा और उसके छोटे भाई सिलवैस्टर को लेकर पाइन लेवल, अलबामा में स्थित बच्चों के नाना के खेत में चली आईं। वहाँ वे मुर्गियाँ और बछड़े पालते, सब्ज़ियाँ और मूंगफलियाँ उगाते। नन्ही रोज़ा खेतों की खरपतवार निकालने और फसल की देखभाल करने में नाना की मदद करती। उनका परिवार पास के खेतों में कपास चुनने का काम भी करता।



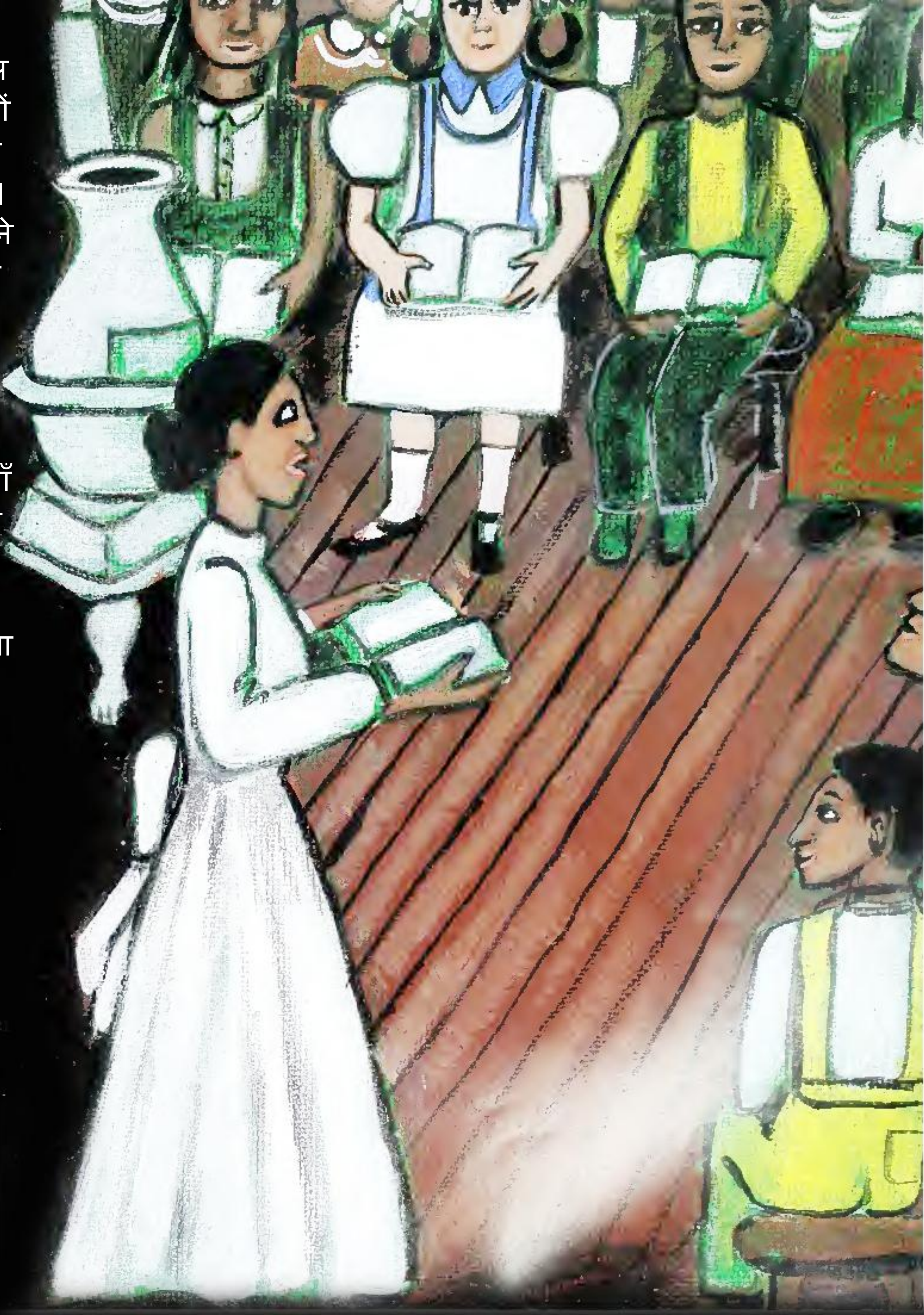
"रोज़ा को अपने शुरुआती बचपन से ही वे दहशतअंगेज़ रातें याद थीं, जब कू क्लक्स क्लैन के सफेद चोंगे व मुखौटेधारी पुरुषों की टोली उनके खेतों के पास से बन्दूकें दागती गुज़रतीं, ताकि काले लोगों को डरा सकें। रोज़ा जानती थी कि वे उनके गिरजों को जलाते हैं, कालों को यातना देते हैं, तब उनकी हत्या भी कर डालते हैं। ऐसे समय भी आए जब रोज़ा का परिवार पूरे कपड़े पहन कर सोता था ताकि अगर उनका घर जलाया जाए तो वे बीच रात में ही उठ कर भाग सकें।

"इन भयावह परिस्थितियों के बावजूद रोज़ा के नाना मुखर वृद्ध थे, जो सबको बताते कि अगर उनके पास गोलियों से भरी लम्बी बन्दूक होती तो वे उसका उपयोग अपना घर और परिवार बचाने के लिए ज़रूर करते। नाना सिलवैस्टर ने अपने बच्चों और नाती-नातिनों में काले होने को लेकर गर्व का भाव पनपाया, खासकर रोज़ा में। रोज़ा प्यारी-सी नन्ही थी, जिसे तारीफ़ पसन्द थी। पर उसे गोरे जिस तरह कालों से बदतमीज़ी से पेश आते थे वह सख़्त नापसन्द था। एक दिन एक गोरे लड़के ने उसे मुक्का जमाने की धमकी दी, रोज़ा ने एक पत्थर उठाया और पलट कर उसे दे मारने की धमकी दी। जब उसकी नानी ने यह सुना वे डर गईं। उन्हें लगा कि गोरे किसी दिन उनकी नवासी को धर कर सूली ही न चढ़ा दें।



"जब रोज़ा छह साल की हुई, वह स्कूल जाने लगी। पाइन लेवल के काले बच्चों के स्कूल में एक कमरा, पचास से साठ बच्चे, और एक शिक्षक हुआ करता था। उनका स्कूल साल में केवल पाँच महीने चला करता था। जबकि गोरे बच्चों का बारहवीं तक का स्कूल साल के नौ महीनों चलता था। गोरे बच्चों के पास स्कूल जाने के लिए बसें थीं, जबकि काले बच्चों अक्सर दूर तक पैदल ही जाना-आना पडता था। पर रोज़ा की माँ लिओना की रोज़ा की शिक्षा के बारे में एक योजना थी। लिओना स्प्रिंग हिल गाँव में एक शिक्षक वाले स्कूल में पढ़ाती थीं। वहाँ पढ़ाने के लिए लिओना को सप्ताह भर अपने बच्चों से दूर रहना पड़ता था। पर लिओना ने रोज़ा की आगे की शिक्षा के लिए बचत की थी।

"जब रोज़ा ग्यारह साल की हुईं, वे मोंटगोमरी, अलबामा, में श्रीमती व्हाइट की बालिका शाला में पढ़ने गईं। कई सालों बाद रोज़ा अलबामा राज्य के काले शिक्षकों के कॉलेज मे हाई स्कूल करने के लिए दाखिल हुईं। पर रोज़ा को अपनी पढ़ाई तब छोड़नी पड़ी जब पहले उनकी नानी और बाद में माँ बीमार पड़ीं। माँ तो कुछ समय बाद ठीक हो गईं, पर नानी चल बसीं।

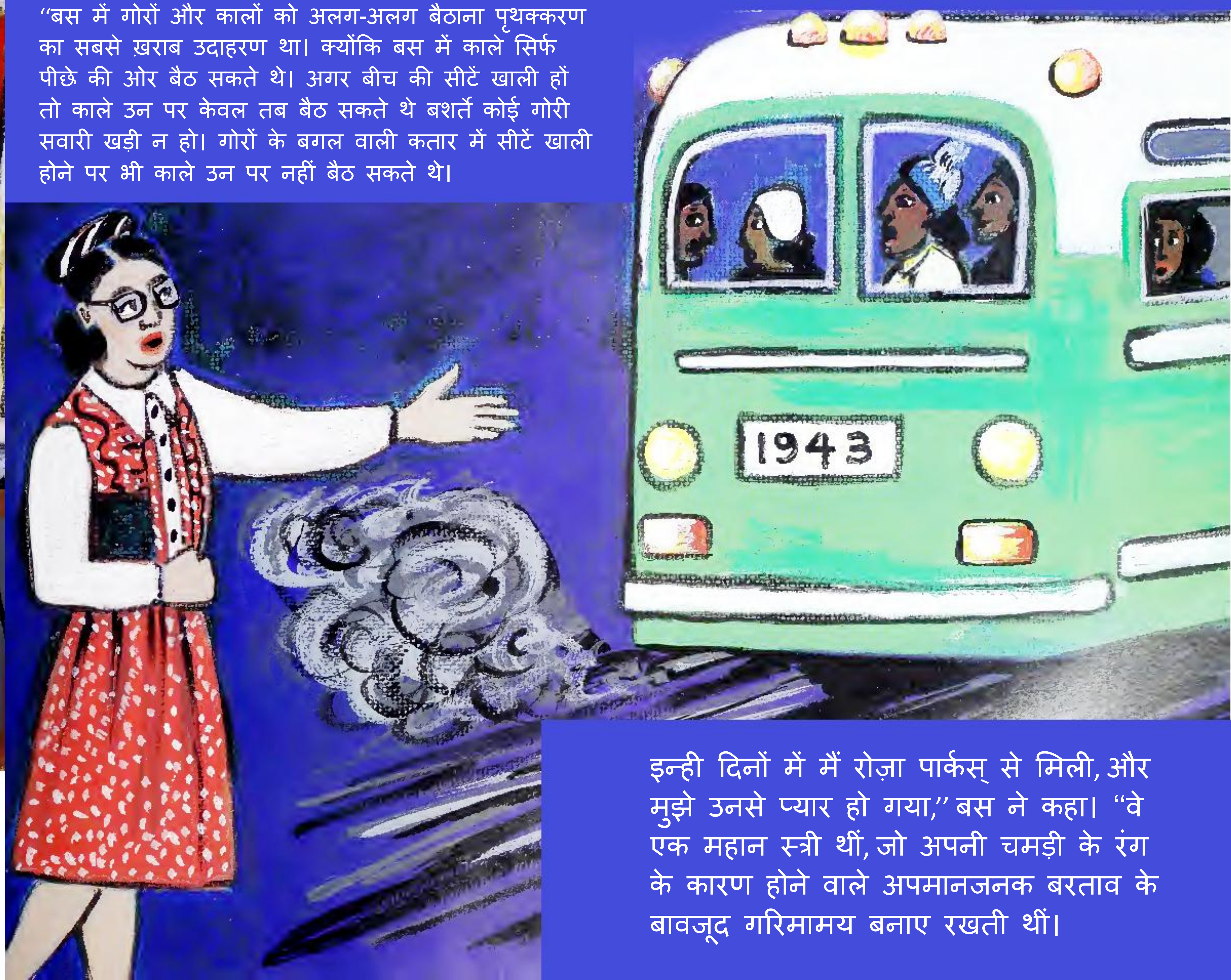




“लिओना के ठीक होने के बाद रोज़ा अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई करने लौटीं, और हाई स्कूल का डिप्लोमा पा लिया। पर अपने टाइप करने और लिख पाने के कौशल के बावजूद उन्हें काम पाने में कुछ बरस लगे। सो इस बीच रोज़ा ने मौंटगोमरी फेयर डिपार्टमेंट स्टोर में कपड़े सीने और सुधारने का काम किया।

“एक दिन काम के बाद घर लौटते समय बस चालक ने उनसे कहा कि वे बस का भाड़ा चुका कर पिछले दरवाजे से घुसें। किराया चुकाने के बाद जब रोज़ा उतर कर पिछले दरवाज़े तक पहुँचती उसके पहले ही बस चालक उसे सड़क पर छोड़ चला गया। ऐसा बरताव काफ़ी आम था। फिर क्या अचरज कि काले बस में चढ़ने की बजाए मील भर या उससे भी अधिक पैदल चल काम पर पहुँचना और वहाँ से वापस लौटना पसन्द करते थे।

“बस में गोरों और कालों को अलग-अलग बैठाना पृथक्करण का सबसे ख़राब उदाहरण था। क्योंकि बस में काले सिर्फ पीछे की ओर बैठ सकते थे। अगर बीच की सीटें खाली हों तो काले उन पर केवल तब बैठ सकते थे बशर्ते कोई गोरी सवारी खड़ी न हो। गोरों के बगल वाली कतार में सीटें खाली होने पर भी काले उन पर नहीं बैठ सकते थे।



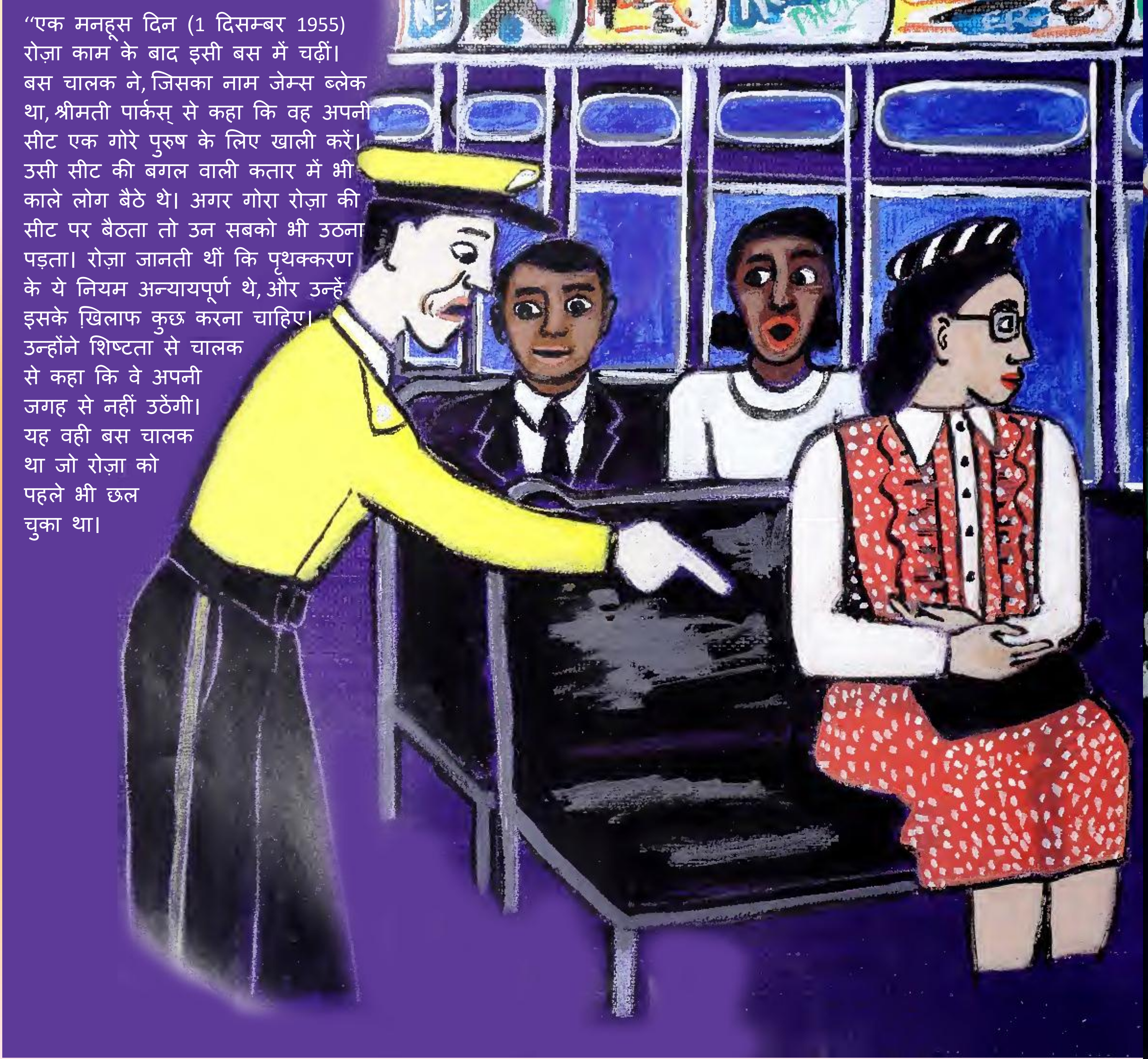
इन्ही दिनों में मैं रोज़ा पार्कस् से मिली, और मुझे उनसे प्यार हो गया,” बस ने कहा। “वे एक महान स्त्री थीं, जो अपनी चमड़ी के रंग के कारण होने वाले अपमानजनक बरताव के बावजूद गरिमामय बनाए रखती थीं।



"तब कुछ अच्छा हुआ। रोज़ा ने एक भले आदमी, रेमंड पार्कस से शादी कर ली। वे अपने पति को पार्कस् कह कर ही संबोधित किया करती थीं। वह भी उसके नाना सिलवेस्टर की ही तरह एक काला आदमी था, पर उसकी चमड़ी का रंग हल्का था। वह गोरों के मुहल्ले में पला-बढ़ा था। वह दिखता गोरों जैसा था पर उसे गोरों की स्कूल में पढ़ने नही दिया गया था। उसके मुहल्ले के सबसे पास जो कालों का स्कूल था वह भी बेहद दूर था। सो उसकी माँ ने ही उसे घर पर पढ़ना-लिखना सिखाया था। स्वाल्प औपचारिक शिक्षा के बाजूद वह कालों की समस्याओं पर बखूबी बोल भी सकता था। पार्कस् ने रोज़ा को अपनी पढ़ाई जारी रखने की प्रेरणा दी।

"रेमंड पार्कस् पेशे से नाई थे, और लम्बे समय से एनएएसीपी (नैशनल एसोसिएशन फॉर एडवान्समेंट ऑफ कलर्ड पीपल) के सदस्य थे। श्रीमती पार्कस् भी संस्था की सदस्य बनीं और जल्द ही उन्हें एनएएपीसी की मोंटगोमरी शाखा का सचिव बना दिया गया। वे अपनी शिक्षा का उपयोग लोगों की मदद करने में करने लगीं। वे युवाओं की नेता बनीं और उन्होंने समूचे शहर के युवाओं का सम्मेलन आयोजित किया।

"पार्कस् ने 'स्कॉटटस्बरो बॉयस' कहलाए गए चार नौजवानों को छुड़ाने के लिए कड़ी मेहनत की। इन युवकों को उस जुर्म के लिए गिरफ्तार कर लिया गया था, जो उन्होंने किया ही नहीं था। पार्कस् मतदाता पंजीकरण के भी सक्रियकर्मी थे और अपने घर में रोज़ा के साथ मतदाता लीग की नियमित बैठकें करते थे। इस अनुभव के बाद ही रोज़ा का मतदाता के रूप में पंजीकरण हो पाया। जबकि इसके पहले तीन बार उनका आवेदन ठुकरा दिया गया था।



“एक मनहूस दिन (1 दिसम्बर 1955) रोज़ा काम के बाद इसी बस में चढ़ीं। बस चालक ने, जिसका नाम जेम्स ब्लेक था, श्रीमती पार्क्स् से कहा कि वह अपनी सीट एक गोरे पुरुष के लिए खाली करें। उसी सीट की बगल वाली कतार में भी काले लोग बैठे थे। अगर गोरा रोज़ा की सीट पर बैठता तो उन सबको भी उठना पड़ता। रोज़ा जानती थीं कि पृथक्करण के ये नियम अन्यायपूर्ण थे, और उन्हें इसके ख़िलाफ कुछ करना चाहिए। उन्होंने शिष्टता से चालक से कहा कि वे अपनी जगह से नहीं उठेंगी। यह वही बस चालक था जो रोज़ा को पहले भी छल चुका था।



जब श्रीमती पार्क्स् ने अपनी जगह से उठने से इन्कार कर दिया, तो ब्लेक ने पुलिस बुलाई, जो उन्हें पृथक्करण कानून तोड़ने के जुर्म में गिरफ्तार कर जेल ले गई।

“इसी साहसिक काम के कारण हर साल एक दिन श्रीमती पार्क्स् की सीट आरक्षित रखी जाती है,” बोलने वाली बस ने कहा, “और हम ब्लेक को कभी इस बस को चलाते नहीं देखना चाहते।”

“आमीन! आमीन!” सवारियों ने एक स्वर में कहा।

“श्रीमती पार्कस् ने कितना समय जेल में बिताया?” मैंने पूछा।

“बहुत लम्बा समय नहीं मार्सी। जब मोंटगोमरी के एनएएसीपी शाख के अध्यक्ष श्री ई. डी. निक्सन ने सुना कि श्रीमती पार्कस् को गिरफ्तार कर लिया गया है, उन्होंने फौरन जमानत भरी और उन्हें रिहा करवा लिया गया। निक्सन ने रोज़ा से कहा कि बसों में पृथक्करण का विरोध करने के लिए बसों के बहिष्कार में वे मदद करें। रोज़ा शहर भर में हो रहे इस विरोध का हिस्सा बन खुश हुई। श्री निक्सन ने विरोध में विमेन्स पोलिटिकल काउन्सिल तथा शहर के काले पादरियों से भी मदद मांगी। यह विरोध बाद में मोंटगोमरी बस बहिष्कार नाम से मशहूर हुआ।





“इन पादरियों में एक डैक्स्टर एवेन्यू बैपटिस्ट चर्च का युवा पादरी था। उनका नाम था डॉ. मार्टिन लूथर, जूनियर। निक्सन ने उन्हें बहिष्कार का नेतृत्व करने को कहा। इसलिए क्योंकि वे शहर में नए थे और उनसे बड़ी उम्मीदें थीं। डैक्स्टर एवेन्यू गिरजे में उस वक्त बहुत भीड़ थी, जब डॉ. किंग ने लोगों को बहिष्कार के बारे में बताया। यही नागरिक अधिकार आन्दोलन और उनके कई यादगार भाषणों की शुरुआत भी थी।”

“इस दिन डॉ. किंग ने कहा कि हम अलगाव और अपमान सहते, दमन के क्रूर पैरों की लातें खाते थक चुके हैं।”



381 दिनों तक - यानी एक साल से भी अधिक काले लोगों ने काम पर जाते और वहाँ से लौटते समय बसों का इस्तमाल नहीं किया। वे या तो पैदल, या साझी गाड़ी की व्यवस्था कर काम चलाते रहे। काली सवारियों के बिना बसें लगभग खाली रहतीं। इससे शहर को काफी नुकसान हुआ। मोंटगोमरी बस बहिष्कार असरकार रहा।"

"आमीन! आमीन!" सवारियों ने एक साथ कहा। हम जानते हैं, हम वहीं तो थे।"



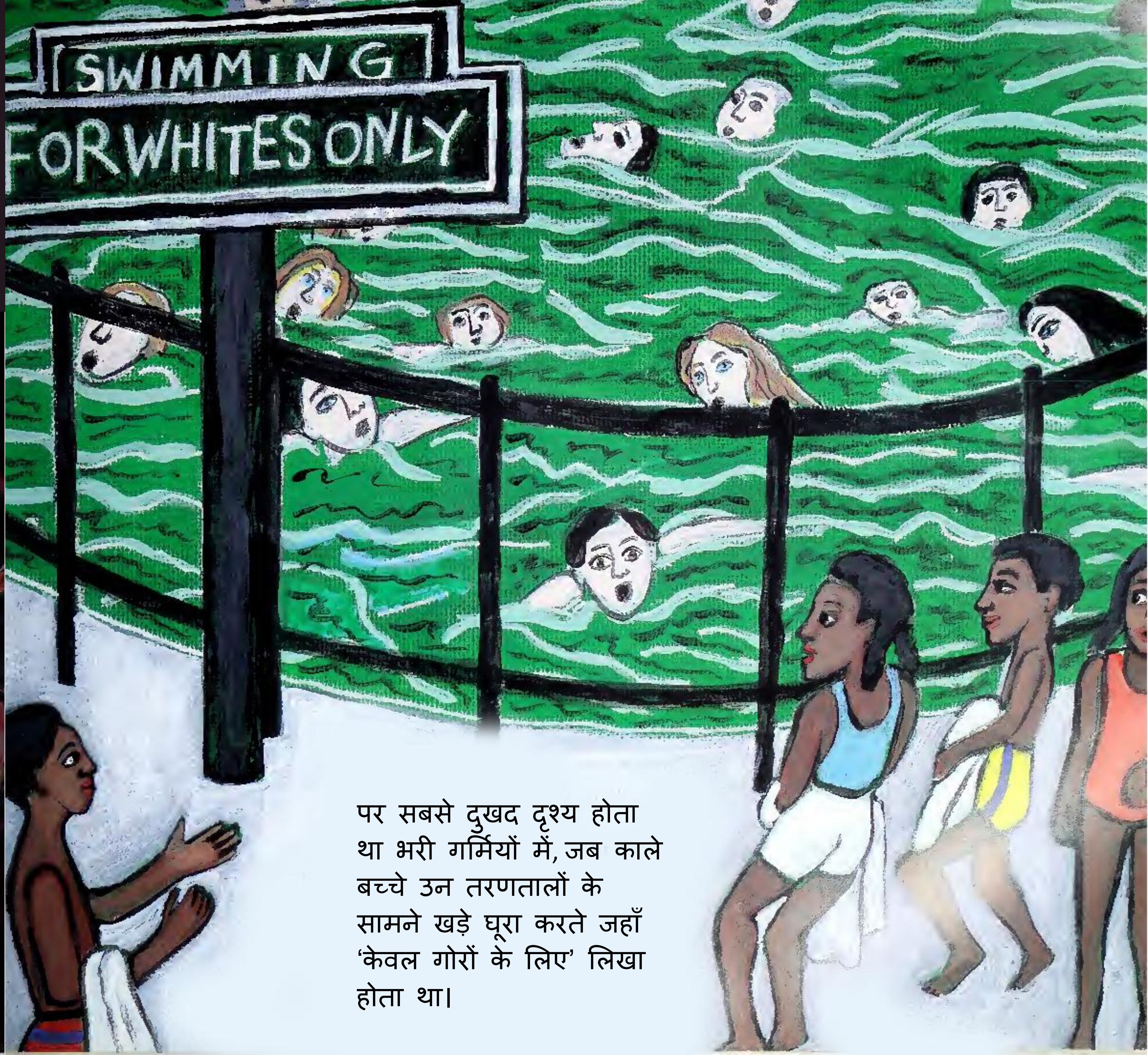
इस बहिष्कार के कारण डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके घर को बम से उड़ा दिया गया। कई अन्य लोगों को भी गन्दी गालियाँ बकी गईं, फोन और बमों से धमकाया गया।

मोंटगोमरी बहिष्कार एक राष्ट्रीय आन्दोलन बन चला था, जिसमें हर नस्ल के लोगों ने अलगाववाद के खिलाफ विरोध आयोजित किए। तब यह बहिष्कार डिपार्टमेंट स्टोर तक भी पहुँचा। इन बड़ी दुकनों में कालों को ख़रीदे कपड़े लौटाने नहीं दिए जाते थे। ना ही ख़रीदने के पहले उन्हें पहन कर जाँचने दिया जाता था।''

''क्या मतलब? क्या मिस रोज़ा एक जोड़ी जूता पहन कर नहीं देख सकती थीं, या पोशाक का आकार सही है या नहीं, यह नहीं जाँच सकती थीं?'' मैंने हैरत से भर पूछा।

''हाँ मार्सी, मैं जानती हूँ कि आज के किशोरों को यह समझ नहीं आ सकता कि पृथक्करण कानूनों के तहत ज़िन्दगी कैसी थी। उस समय ईट-इन आयोजन भी होते थे, जहाँ काले और उनसे हमदर्दी रखने वाले गोरे, उन लंच काउन्टरों पर धरने पर बैठते जहाँ 'केवल गोरों के लिए' लिखा होता था, और नाराज़ भीड़ उन पर खाना उलीचती थी।

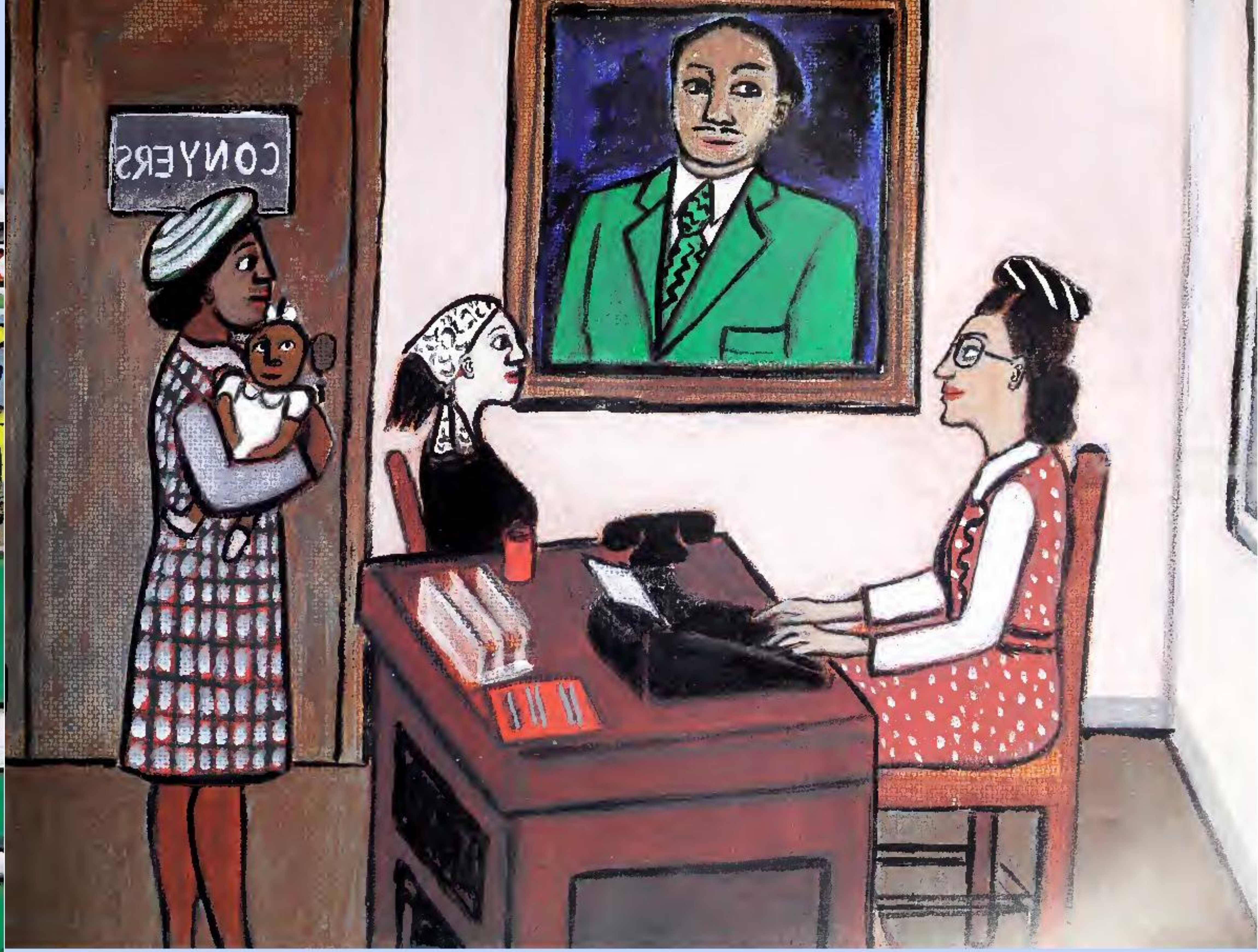




पर सबसे दुखद दृश्य होता था भरी गर्मियों में, जब काले बच्चे उन तरणतालों के सामने खड़े घूरा करते जहाँ 'केवल गोरों के लिए' लिखा होता था।

श्रीमती पार्कस् का मामला अमरीका की सबसे बड़ी अदालत में पहुँचा। 13 नवम्बर 1956 में अदालत ने अपने फैसले में कहा कि सार्वजनिक बसों में पृथक्करण, कानून के विरुद्ध है। इसके तकरीबन माह भर बाद बस बहिष्कार भी समाप्त हुआ। अब कालों को बस में पीछे नहीं बैठना पड़ता था, पर समान अधिकारों के लिए लड़ाई अब भी जारी थी। रोज़ा का मोंटगोमरी फेयर डिपार्टमेंट स्टोर का, हर सप्ताह पच्चीस डॉलर वाला काम छिन चुका था।
उसे धमकियों से भरे फोन और ख़त आते थे।





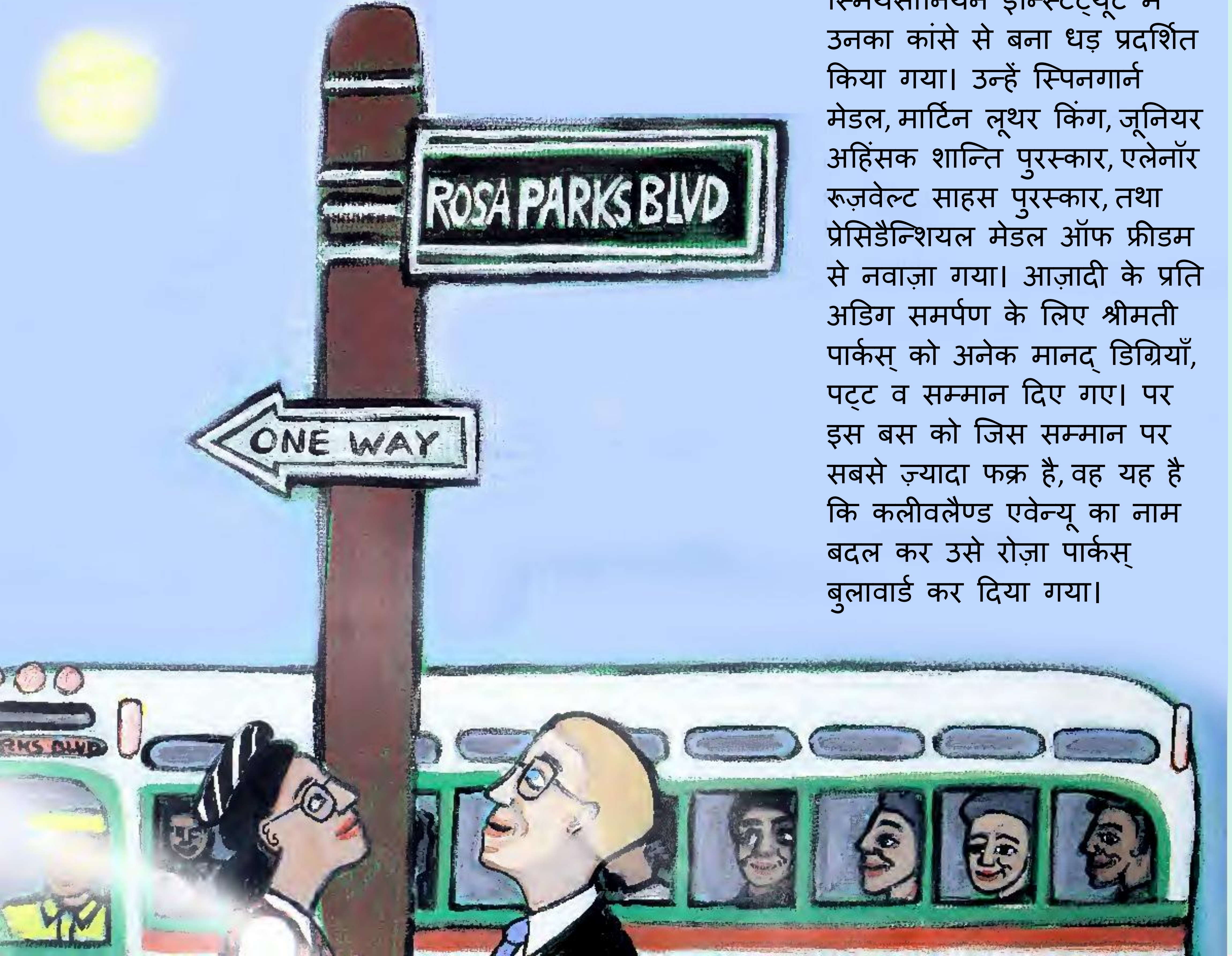
साल भर बाद रोज़ा और रेमंड पार्कस् डेटरॉइट चले गए। वहाँ रोज़ा मिशिगन के कांग्रसमैन जॉन कॉन्यर्स के लिए काम करने लगीं। वे बेघर लोगों को उचित घर, नौकरियाँ और सामुदायिक सुविधाएं पाने में मदद कर सकीं।



समान अधिकारों के लिए श्रीमती पार्कस् की लड़ाई जारी रही। 28 अगस्त 1963 को डॉ. किंग के वॉशिंगटन मार्च के समय रोज़ा पार्कस् को फिलिप रैन्डॉल्फ की कविता 'ट्रिब्यूट टू विमेन' से सम्मानित किया गया। पर उन्हें तब भी मंच पर से बोलने को आमंत्रित नहीं किया गया।



बाद में रोज़ा पार्कस् ने डॉ. किंग की हत्या के बारे में सुना, वे अपनी माँ की बाहों में लिपट कर रोईं।



"इस साहसी व सौम्य स्त्री को अनेक सम्मानों व पुरस्कारों से नवाज़ा गया। वॉशिंगटन के स्मिथसोनियन इन्स्टिट्यूट में उनका कांसे से बना धड़ प्रदर्शित किया गया। उन्हें स्पिनगार्न मेडल, मार्टिन लूथर किंग, जूनियर अहिंसक शान्ति पुरस्कार, एलेनॉर रूज़वेल्ट साहस पुरस्कार, तथा प्रेसिडैन्शियल मेडल ऑफ फ्रीडम से नवाज़ा गया। आज़ादी के प्रति अडिग समर्पण के लिए श्रीमती पार्कस् को अनेक मानद् डिग्रियाँ, पट्ट व सम्मान दिए गए। पर इस बस को जिस सम्मान पर सबसे ज़्यादा फक्र है, वह यह है कि कलीवलैण्ड एवेन्यू का नाम बदल कर उसे रोज़ा पार्कस् बुलावार्ड कर दिया गया।



"इसके अलावा हम साल में एक दिन उस महान स्त्री की सालगिरह मनाने इकट्ठा होते हैं।

"आमीन! आमीन!" सवारियों ने एक साथ कहा।

और तब बस रुकी और श्रीमती पार्कस् खुद बस में चढ़ीं। सभी सवारियाँ उनका स्वागत करने खड़ी हो गईं। श्रीमती पार्कस् ने हरेक का नाम लेकर उनसे दुआ-सलाम की - पार्कस्, ई. डी. निक्सन, डॉ. किंग, और भी तमाम लोग - जिनके नाम मुझे रोज़ा पार्कस् की कहानी से याद थे। पहले जो सवारियाँ अपरिचित थीं, अब उनकी शक्लें मेरे मन में छप चुकी थीं। मैं उन्हें कभी भी भूलने वाली नहीं थी।

"मुझे आपसे मिल कर बेहद खुशी हुई," मैंने शुक्रगुज़ारी के साथ कहा। "मैं सचमें खुशकिस्मत हूँ कि मैं यहाँ हूँ। क्या मैं जान सकती हूँ कि आज़ादी में इस किस्म की आस्था आप में कैसे जगी?"

"आज़ादी में मेरी आस्था सुदूर बचपन तक - जाती है। मेरी माँ तब नीग्रो स्पिरिच्युल्स गाया करती थीं - ओ आज़ादी, मेरे ऊपर," श्रीमती पार्कस् ने कहा, "चलो हम साथ गाएं।"

ओ आज़ादी

ओ आज़ादी

ओ आज़ादी

ओ आज़ादी मेरे ऊपर

इससे पहले कि मैं बनूं गुलाम

चाहूँगी मैं कि दफनाया जाए
मुझे मेरी कब्र में।

"अब आपका केक काटने का समय आ गया है," बोलती बस ने कहा। श्रीमती पार्कस् ने आँखें बन्द कीं, एक गहरी साँस ली और सारी मोमबत्तियाँ बुझा दीं।



"सालगिरह मुबारक हो श्रीमती पार्कस्," सवारियों ने कहा। "आज़ादी और समता के आपके सारे सपने सच साबित हों। हम आपसे प्यार करते हैं, और इस बात के शुक्रगुज़ार हैं कि आप अपनी सीट पर बैठी रहीं, और आपने दुनिया भर के लोगों को आज़ादी के लिए उठ खड़े होने को प्रेरित किया। आमीन! आमीन! हम जानते हैं, हम वहीं थे।"



जब तक बस मेरे स्कूल तक पहुँची मेरी खोपड़ी में वे तमामा चीज़ें भर चुकी थीं, जो अतीत में घटी थीं। मैं जब आज सुबह जागी थी मुझे कतई इल्म न था कि मैं बस में श्रीमती रोज़ा पार्कस् की सालगिरह में शरीक हो सकूंगी। उसी बस में जिसमें उन्हें गिरफ्तार किया गया था। मैं अपनी कक्षा को यह सब बताने को बेताब हूँ।



PERBACKS
York
China
ISBN 0-689-85676-8
50699